पराग 2

पाठ 1. श्रम की पूजा

पाठ का परिचय

कवि का कहना है कि जीवन में परिश्रम करने वाले लोग सदा आगे बढ़ते जाते हैं। जो लोग मेहनत करने से घबराते हैं, वे कभी अपनी मंज़िल नहीं पाते। परिश्रम से जब पर्वत अपना शीश उठाते हैं, तो बढ़ते हुए तूफ़ान भी रुक जाते हैं। इसलिए परिश्रम ही सच्चा धन है। इनसान का परिश्रम कभी भी बेकार नहीं जाता, उसका कुछ न कुछ लाभ अवश्य मिलता है। परिश्रमी व्यक्ति संसार में आदर का पात्र बनता है तथा जो लोग परिश्रम करने से कतराते हैं, उन्हें जीवन भर पछताना पड़ता है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

परिश्रम सफलता की कुंजी है। इस पाठ में सच्चाई और सादगी के रास्ते पर चलते हुए लगातार अपनी मंज़िल की ओर आगे बढ़ते रहने का संदेश दिया गया है। साथ ही इससे हमें यह भी संदेश मिलता है कि हमें अपने परिश्रम से अपने देश-समाज में अपना मान बढ़ाना चाहिए।

पाठ का वाचन

कविता की एक-एक पंक्ति को लय के साथ गाएँ। प्रत्येक शब्द के उच्चारण पर ध्यान दें। बच्चों से अनुकरण करने को कहें। एक बार कविता पूरी पढ़ लेने के बाद बच्चों से इसी कविता को एक साथ एक स्वर में गाने को कहें। कविता में आए नए शब्दों को, जो उच्चारण या अर्थ की दृष्टि से कठिन लगें, उन्हें श्यामपट्ट पर लिखें। बच्चों से उन शब्दों का शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

नीचे दिए गए प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- तुम अपने आस-पास परिश्रम के कौन-से उदाहरण देखते हो?
- तुम स्वयं किन कार्यों में, क्या परिश्रम करते हो?
- परिश्रम का हमारे शरीर और मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- पशु-पक्षी किस प्रकार परिश्रम से अपना जीवन निर्वाह करते हैं?
- परिश्रम न करने का मनुष्य के जीवन पर क्या प्रभाव हो सकता है?